आचार्य हुलेश्वर जोशी

महान भारतीयों को संदेश

मार्च 2011

संकलन कर्ता

आचार्य हुलेश्वर जोशी

लेखक / कवि

आचार्य त्रिभुवन जोशी,

माता श्यामा देवी

एवं आचार्य हुलेश्वर जोशी

प्रकाशक एवं मुद्रक

आचार्य हुलेश्वर जोशी द्वारा निःशुल्क वितरण हेतू जनहित में प्रकाशित

संदेश

प्रिय पाठकगण,
मैं समस्त भारतवासी भाई–बहनों से आह्वान करता हुं
कि आओ हमारा सहयोग करो
ताकि हम अपनें महान भारत को पुनः सर्वोच्चता प्रदान करते हुए
हम स्वयं को विश्व के मानव समुदाय से श्रेष्ठ घोषित करनें का गौरव प्राप्त करें।

आचार्य हुलेश्वर जोशी

————++++————

आओ एकरूपता लायें

हम सब भारतीय हैं हमें यह चाहिये कि हममें किसी भी प्रकार की भेद न हो और हम एकरूप हों जिस प्रकार से हम विद्यालयके समस्त विद्यार्थीयों को देखते हैं तो हम स्वयं के पुत्र–पुत्री को पहचान नहीं पाते सब बालकमें हमें अपना बालक दिखाई देता है हम जब उनके बहुत करीब जाते है तब ज्ञात होता है कि यह हमारे पुत्र–पुत्रीके समान है परन्तु क्षणभर बाद ही हम उसे अपना माननें से इनकार कर देते हैं, जितनें बार जितनें विद्यार्थी को देखते हैं, हम उतनें बार महसुस करतें हैं–कि वह हमारा है और हम उनके हैं। फिर भी हम उन्हें अपना मानते नही जबकि ये विद्यार्थी हमें गुरू की तरह बार बार सिखाये जा रहे हैं हम इतनें मुढ़ कैसे हुए कि सिखानें पर भी नहीं सिखते। मैं चाहता हुं कि हम इसी भाव को सीखें और इसी भाव को अंतर्मन में स्थायी कर लें ताकि हम एकरूपता के कारण एकदूसरे में इसप्रकार समां जायें कि वह हमारा है, हम उनके हैं, कोई भी पराया नही है फिर जीवन जीनें में जो आनन्द मिलेगी वह स्वर्ग के समस्त सुखों से श्रेष्ठ होगी और देखना कि फिर से भगवान पृथ्वी में जन्म लेनें को तड़पेंगे जैसे कोई प्रेमी अपनी प्रेमिका को तड़पता है, मॉ अपनी बालक को तड़पती है और मृत्यु सैय्या पर सोया अभिलाषी जीवन को तड़पता है।

अतः मै आप सबसे निवेदन करता हुॅ कि आओ हम सब मानव समुदाय में एकरूपता के भाव का सृजन करें, आत्मसात करें, एकरूप होकर सुर्य में किरन और जीवन में आत्मा की तरह विलीन हो जाएॅ, अविभाज्य हो जायें।

आचार्य त्रिभुवन जोशी

———+++———

सर्वोच्चतम् शांति संदेश

प्रिय आत्मीय

आप सबसे हमारा निवेदन पूर्वक आह्वान है कि आओ हमारा सहयोग करके हमें अनुग्रहित करें ताकि हम सब मिलकर **भारत को सर्वोच्च शांति वाहक एवं शराबी रहित देश** बनाने में सफलता प्राप्त करें।

हमारा संकल्प – आज से हम शराबीयों से बात नहीं करेंगे, उन्हें बात करनें से मना करेंगे, उनका सहयोग नहीं करेंगे और उनसे दोस्ती नहीं करेंगे क्यों कि वे दोस्ती के काबिल नहीं होते हैं।

आचार्य हुलेश्वर जोशी

———+++———

समाज का पुनःस्थापना
आचार्य ब्राम्हण समाज के द्वारा

हे आत्मिय बंधु,

आप सबसे मेरा निवेदन है कि आप सब उस दिन तक ही छोटे मानें जाओगे, हीन समझे जाओगे और घृणा के योग्य समझे जाओगे जिस दिन तक आप स्वयं को छोटा मानोगे इसलिये मैं आचार्य ब्राम्हण समाज की ओर से आप सबको श्रेष्ट अनुभव करनें और स्वयं को उच्च जाति का मानने के लिये आह्वान करता हुॅ।

इस हेतु मैं आप सबकी समस्त प्रकार से मानसिक सहयोग करनें की घोषणा करता हुॅ।

आचार्य हुलेश्वर जोशी

———+++———

श्रेष्ठ संस्कारों की सृजन करें

हे माताओं, मै आपसे निवेदन करती हुं कि आओ हम सब मिलकर श्रेष्ठ संस्कारों की सृजन करें ताकि हमारी आनें वाली पीढ़ी श्रेष्ठ संस्कारों से सुसज्जित होकर हमारे कुल के नाम को गौरब प्रदान करनें के योग्य हो सके, विश्व में हमें सर्वोच्च स्थान प्राप्त हो। यदि आपके पुर्वज श्रेष्ठ रहे, सर्वोच्च स्थान के योग्य रहे, तब आप अवश्य ही उनके द्वारा प्राप्त ज्ञान को उनके आदेश को अपनें आनें वाली पीढ़ी के लिए सुरक्षित पहुँचाओ, उन्हें श्रेष्ठ संस्कारों से संस्कारित करो और अपनें कुल के परम्परा को आगे बढ़ाते हुए ऊँचे स्थान को प्राप्त करो। मुझे पुर्वजों से सर्वोच्च स्तर का ज्ञान प्राप्त हुआ है क्योकि मेरे पुर्वज पुज्यनीय रहे हैं मेरी आकांक्षा है कि मैं भी अपनें पुर्वजों की भांति स्थान को प्राप्त होऊँ इसलिए मैं आप सबसे निवेदन करती हुँ कि आप भी पुज्यनींय हों जो कि हमारे भारत के सम्मान में गुणक का कार्य करे, और सारा विश्व हमारे सम्मान में अपना शिश झुकाना अपना भाग्य समझे। मानव के रूप में हमारा जीवन तभी सफल होगा जब हम इस हेतू आवश्यक कार्य करेंगे जबकि उन कार्यों में ज्ञान का सृजन करना श्रेष्ठ है। भारत को मानव के उत्पत्तिकाल से ही विश्व के गुरू के रूप में जाना जाता रहा है और इसका एक ही कारण रहा वह है भारतीयों के द्वारा ज्ञान का प्रसार करना, शिक्षा देना और विश्व को सीखनें का अवसर देना, इसलिए हे भारतीय आत्मा उठो, सोये मत रहो अपनें सम्मान और स्थान को बनाये रखो।

माता श्यामा देवी

———+++———

मोह पर मोहन का प्रथम अधिकार

शिक्षाग्रहण पहले भोजन ग्रहण नहले

प्रेम है ऋण योग्य वस्तु

नया रूप देदो

हमेशा कह जाता है और हमारे धर्मग्रंथ में लिखा है जो कि महासत्य है—''परिवर्तन संसार का नियम है।'' और इसी वाक्य को आचार्य त्रिभुवन के शब्दों में लिखें तो होगा—'' नया रूप देदो'' ऐसा उनके कहनें का कारण है उनके निति का ज्ञाता होना है मैं उन दिनों को स्वप्न में भी देखना चाहुँगा जब हमारे आचार्य त्रिभुवन जी महराज निति का शिक्षा दिया करते रहे होंगे। अथवा निति की प्रयोग करनें की सोंचते रहे होंगे मैं उनके निति प्रयोग की विधि को जानना चाहता हुँ परन्तु यह मेरी जागृत अवस्था में सपना देखना मात्र है, मै जहॉ तक उनके वाक्य का मतलब समझता हुँ, इसका तात्पर्य ब्यवसायिक प्रस्तुतीकरण से होगा, ब्यवसायिक प्रस्तुतीकरण के समय किसी एक ही माडल को, एक ही वस्तू को, एक ही तत्व को अलग

परमात्मा से सीखो

आआ मैं तुम्हें घृणा करना सिखा दुं

अच्छी विचारधारा मानव की मुल है

रहस्य क्या है

द क्राइम

मेरी उलझन

नेकी करो कुएँ मे कुद मरो

अर्थ क्या है

जीवन क्या है

19 जनवरी

मुर्खता संरक्षण योग्य नहीं है

अपराध को खत्म नहीं अपराधी को प्रतिबंधित करो

विशिष्ट, छोटे पद के लिए प्रतियोगिता नही करो

सृजनात्मक क्षमताओं की विकाश जरूरी

लक्ष्य निर्धारण के लिए कुछ भी आश्यक नही

मुझे बनालो अपना हीरो

नीचे सब दौडते हैं, विकास करना है तो आसमान से सीखो